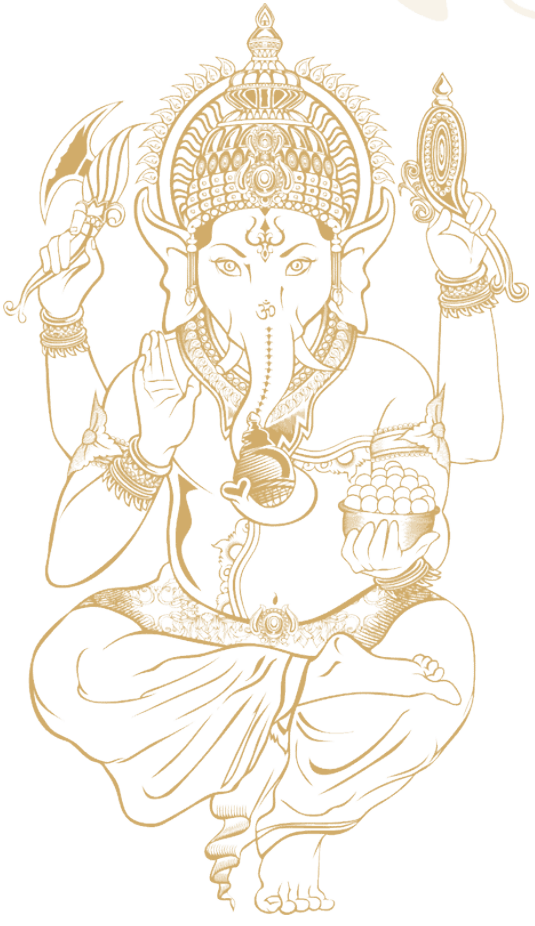

Shyana Chand

13 Mar 2018

04:02 AM

Pune

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121469501**

तिथि 13/03/2018 **समय** 04:02:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Pune **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:06:28
अक्षांश 18:34:00 उत्तर **रेखांश** 73:58:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	14:49:57 घं
वेलान्तर	00:09:31 घं
सूर्योदय	06:45:15 घं
सूर्यास्त	18:42:53 घं
चैत्रादि संवत	2074
शक संवत	1939
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	11
नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा
योग	परिघ
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	सिंह
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	जा-जयन्ती
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

सूर्य 1वर्ष 10मा 22दि

चन्द्र

03/02/2020
02/02/2030

चन्द्र	03/12/2020
मंगल	04/07/2021
राहु	03/01/2023
गुरु	04/05/2024
शनि	03/12/2025
बुध	05/05/2027
केतु	04/12/2027
शुक्र	03/08/2029
सूर्य	02/02/2030

योगिनी

संकटा 2वर्ष 6मा 9दि

धान्या

21/09/2023
21/09/2026

धान्या	21/12/2023
भ्रामरी	21/04/2024
भद्रिका	20/09/2024
उल्का	22/03/2025
सिद्धा	21/10/2025
संकटा	21/06/2026
मंगला	22/07/2026
पिंगला	21/09/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			09:16:54	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			28:11:04	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.23	अमात्य	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			05:47:25	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	बुध	सम राशि	1.80	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			03:08:56	धनु	मूल	1	केतु	सूर्य	मित्र राशि	1.68	कलत्र	भ्रातृ	मित्र
बुध			16:06:57	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	नीच राशि	0.73	भ्रातृ	ज्ञाति	साधक
गुरु	व		29:05:34	तुला	विशाखा	3	गुरु	सूर्य	शत्रु राशि	0.99	आत्मा	धन	प्रत्यारि
शुक्र			13:17:20	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	राहु	उच्च राशि	0.87	पुत्र	कलत्र	साधक
शनि			13:59:09	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.27	मातृ	आयु	अतिमित्र
राहु			20:23:03	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	शुक्र	शत्रु राशि		---	ज्ञान	वध
केतु			20:23:03	मक	श्रवण	4	चंद्र	केतु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

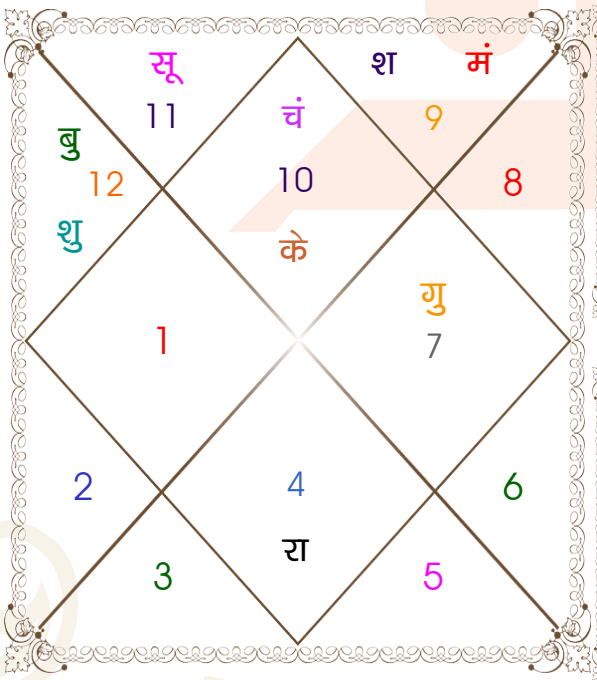

चन्द्र कुंडली

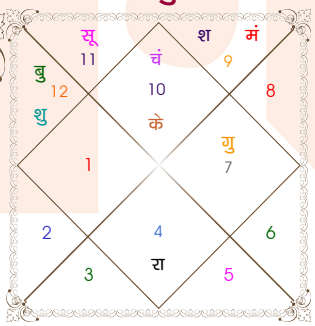

नवमांश कुंडली

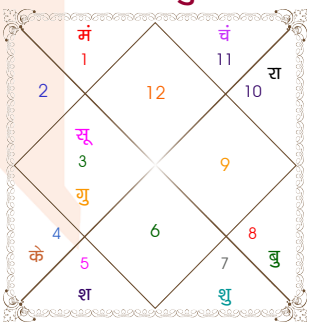

सर्वाष्टकवर्ग

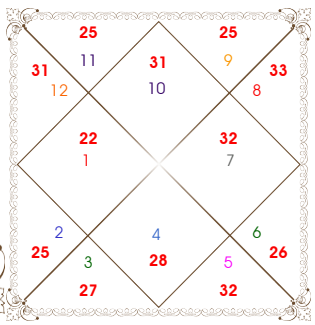

दशमांश कुंडली

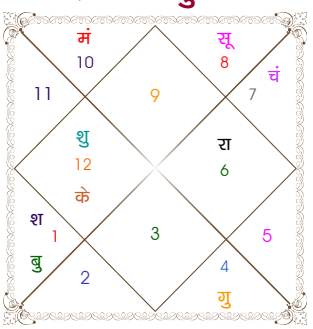

नक्षत्रफल

आप उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि नकुल, वर्ण वैश्य, गण मनुष्य, वर्ग सिंह तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का आधाक्षर "ज" या "जा" से प्रारम्भ होगा यथा- जानकी , जगदम्बा आदि।

समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होगी तथा सभी सामाजिक जन आपको हादिक मान सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। आप में सात्विक गुणों की प्रधानता रहेगी तथा तामसिक गुणों का सर्वथा अभाव रहेगा। साथ ही आप अपने समस्त कार्यों को शान्त स्वभाव से सम्पन्न करेंगी तथा विषम परिस्थितियों में भी घबराहट का प्रदर्शन नहीं करेंगी। जीवन में आप नाना प्रकार के सुख संसाधनो सें युक्त होकर उनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगी। धन दौलत से आप सर्वथा सम्पन्न रहेंगी तथा इसका आप के पास अभाव कम ही रहेगा। आप विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने तथा कई कार्यों को सम्पन्न करने में भी सफल रहेंगी अतः समाज में एक विदुषी के रूप में भी सम्माननीय रहेंगी एवं ख्याति प्राप्त करेंगी।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सुखी, धनवान तथा पंडित होता है।

आप अन्य लोगों के साथ में हमेशा विनम्रता का व्यवहार करेंगी अतः सभी लोग आपकी इस विनयशीलता से प्रभावित रहेंगे एवं आपकी प्रशंसा भी करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धाभाव रहेगा तथा धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करने में भी आप प्रयत्न शील रहेंगी। आप के मित्र भी काफी संख्या में रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होगा। आप किसी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर उसका उपकार स्वीकार करेंगी तथा हादिक रूप से उसका आभार भी प्रकट करेंगी। अतः सभी लोग आपकी इस कृतज्ञता की भावना से सन्तुष्ट रहेंगे। आप बिना किसी भेदभाव के समाज में सभी लोगों का सहयोग करेंगी तथा सभी वर्गो के मध्य समान रूप से लोकप्रिय रहेंगी।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

आपका कद लम्बा होगा एवं शरीर में भी स्थूलता विद्यमान रहेंगी। आप एक साहसी तथा निर्भय प्रकृति की महिला होंगी एवं बहादुरी से अपनी सांसारिक समस्याओं का सामना करते हुए उनका समाधान करेंगी। झगड़े या विवाद आदि कार्यों में भी आप सफल रहेंगी

तथा आपके शत्रु हमेशा आपसे भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने में स्वयं को असमर्थ महसूस करेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

आप में दानशीलता की भावना नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी तथा यथाशक्ति आप अपने जीवन में दीन दुःखियों तथा जरूरतमन्द लोगों को दान देने के लिए यत्नशील रहेंगी। साथ ही आप के हृदय में कोमलता एवं करूणा की भावना भी रहेगी तथा इस भावना के पालन के लिए आप सर्वथा तत्पर रहेंगी। आप सदैव सत्कार्यों को करने में ही रूचिशील रहेंगी तथा आपके अच्छे कार्यों के द्वारा अन्य लोग सन्तुष्ट रहेंगे एवं उनसे लाभान्वित भी होंगे। आप समस्त वैभव से युक्त होकर प्रभुता सम्पन्न रहेंगी एवं समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा। आप को गृहस्थ सुख पूर्ण रूप से प्राप्त होगा तथा पुत्रादि संततियों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही आपका सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा परन्तु आप में अभिमानी प्रवृति भी होगी जिसका आप समय समय पर प्रदर्शन भी करेंगी।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरूषोळभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरूप वाला तथा अभिमानी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्णपाद में उत्पन्न जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में सर्वप्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।आप एक चतुर तथा

बुद्धिमता महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक कद ऊंचा तथा ललाट विस्तृत होगा। आपका शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक रहेगा तथा आखें भी सुन्दरता को प्राप्त होंगी साथ ही कंठ एवं कान दीर्घता से युक्त रहेंगे। संगीत के प्रति आपका विशेष आकर्षण रहेगा तथा इसका आपको विस्तृत ज्ञान होगा। ठंड से आप व्याकुलता का आभास करेंगी एवं इसको सहन करने में अपने आप को असमर्थ समझेंगी। सत्य के प्रति आप निष्ठावान रहेंगी तथा इसके साथ ही धर्म में भी आपकी रूचि रहेगी तथा अन्य लोगों के दिखावे के लिए इसका अनुशरण करेंगी। समाज में सर्वत्र आपका आदर एवं सम्मान किया जाएगा तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी रहेगी। कभी कभी आप थोड़ा बहुत गुस्से का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगी। सर्वजनों के प्रति अपने मन में सामान्यतः प्रेम तथा स्नेह का ही भाव रखेंगी तथा अनावश्यक द्वेष या घृणा किसी से भी नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले लोगों के साथ में मित्रता करने को विशेष इच्छा रखेंगी। लेखन कार्य में आपकी रूचि रहेगी तथा कविता सृजन में आप निपुण हो सकेगी लेकिन आप में उत्साह की न्यूनता रहेगी तथा लालची प्रवृति होने के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना भी करेंगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।

सारावली

आप अपने पति एवं पुत्र सहित परिवारिक समस्याओं में व्यस्त रहेंगी। यदा आपकी प्रवृति अन्य लोगों की बातों से शीघ्र ही सहमत होने की भी रहेंगी तथा उन्ही के कथनानुसार आप किसी भी कार्य करने के लिए उद्यत हो जाएंगी। साथ ही आलस्य का भी आप पर प्रभाव रहेगा। अतः कोई भी कार्य समय पर पूरा होना असम्भव रहेगा। आपको घूमने फिरने तथा यात्रादि का अत्याधिक शौक रहेगा। अतः आपका अधिकाँश समय भ्रमण तथा यात्रा में ही व्यतीत होगा। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा अतः शारीरिक बल भी मध्यम ही रहेगा। आप साहसी एवं निर्भय प्रकृति की महिला होंगी तथा अगम्य स्थानों तथा कठिन कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगी। साथ ही दया एवं करूणा का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा तथा समयानुसार इस प्रवृति का आप अनुपालन भी करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में कई बार आप वात से उत्पन्न रोगों से पीड़ित भी होंगी एवं उनसे कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। साथ ही सर्वप्रकार के सत्वगुणों से भी सुशोभित रहेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।

बृहज्जातकम्

आप परिवार में सामान्य सम्मानर्जित करेंगी परन्तु कुल या परिवार की रीति तथा मर्यादा का नित्य वृद्धि करने के लिए प्रयत्नशील तथा कृत संकल्प होंगी। आप अपने पति को पूर्ण रूप से अपने नियंत्रण में रखने में सफल रहेंगी तथा वे भी अपने समस्त सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों का आप ज्ञानार्जन करेंगी एवं समाज में एक विदुषी का स्थान बनाएंगी। आपको सुन्दर पुरूषों से हमेशा प्रशंसा की प्राप्ति होती रहेगी। माता के प्रति आपका विशेष सेवा तथा सम्मान का भाव रहेगा। साथ ही पुत्रादि संततियों से युक्त होकर आप हमेशा प्रसन्नता को प्राप्त करेंगी। बन्धु वर्ग से आपको यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी तथा धनैश्वर्य का भी आपके पास अभाव नहीं रहेगा। दानशीलता की भावना से भी आप सदैव सुशोभित रहेंगी तथा समयानुसार इसका अनुपालन भी करेंगी। आपका परिवार भी विशाल रहेगा तथा सुख को प्राप्त करने के लिए आप नित्य चिन्तन शील रहेंगी एवं इसे प्राप्त करने के लिए हमेशा तत्पर एवं प्रयत्नशील रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आप जीवन में किसी अन्य संबंधी मित्र या व्यक्ति की सम्पत्ति प्राप्त करेंगी तथा सुखपूर्वक उसका उपभोग भी करेंगी। इसके साथ ही अन्य लोगों के विषय में भी चिन्तित रहेंगी तथा यत्नपूर्वक उनकी भलाई के लिए कार्य करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त सलाह देने आदि कार्यों में भी आप चतुराई का प्रदर्शन करेंगी। बन्धुवर्ग को भी आप हादिक सहयोग प्रदान करेंगी। आप एक साहसी महिला भी होंगी तथा निर्भयता से अपने अधिकाँश कार्यों को सम्पन्न करेंगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

आपका गीतशास्त्र के प्रति हार्दिक अनुराग रहेगा एवं इस क्षेत्र में आप विशेष योग्यता एवं ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। आपकी शारीरिक कान्ति एवं कोमलता दर्शनीय रहेंगी एवं इससे आपके सौन्दर्य में नित्य वृद्धि होगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा

देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा रहेगी। आप के अर्न्तमन में दया एवं करूणा का भाव सदैव विद्यमान रहेगा। अतः दीन दुःखियों की आप हमेशा सहायता करने एवं उनकी भलाई के लिए कार्य करने में तत्पर रहेंगी। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा। अतः समय समय पर अन्य जनों के सम्मुख अपनी इस प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगी। आप शारीरिक बल से पूर्ण रहेंगी तथा अपने अधिकाँश कार्यों को स्वभुजबल से ही सम्पन्न करेंगी। आपको विविध प्रकार के शास्त्रों तथा कलाओं का भी विस्तृत ज्ञान रहेगा अतः एक विदुषी के रूप में आप आदरणीया रहेंगी। आप शारीरिक सुकान्ति से सुशोभित रहेंगी एवं परिवार के अतिरिक्त अन्य बहुत से लोग आपके द्वारा सुख की प्राप्ति करेंगे।

आप धनैश्वर्य से सम्पन्न सर्वमान्य महिला होगी। आपकी आखें देखने में अत्यन्त ही सुन्दर रहेंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप दक्षता प्राप्त कर सकेंगी। आपका वर्ण गोरवर्ण रहेगा तथा समाज में आप एक प्रभावशाली तथा प्रतिष्ठित महिला होंगी एवं नगर के लोगों पर आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा तथा आपकी बातों का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुल योनि में उत्पन्न होने के कारण आप नैसर्गिक रूप से परोपकारी प्रवृति की रहेंगी तथा अन्य लोगों की भलाई के कार्यों को आप अत्यन्त ही दक्षता से सम्पन्न करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे पूर्ण रूपेण प्रभावित रहेंगे। आप एक धनैश्वर्य से सुसम्पन्न महिला होंगी तथा अन्य धनाढ्य एवं सम्पन्न लोग भी आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगे। आप एक उच्चकोटि की विदुषी होंगी तथा कई सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं में आपका मुख्य सहयोग रहेगा। माता पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी एवं आपका भी उनके प्रति विशेष सम्मान तथा सेवा का भाव रहेगा।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की

प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपको वे सर्वदा विशेष स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपको उनसे आर्थिक सहयोग भी प्रायः मिलता रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प तनाव दृष्टिगोचर होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए ही रहेगा कुछ समय उपरान्त स्वतः सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही सुख दुःख में आप उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनिकरण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक हैं। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग तथा शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों का प्रारम्भ न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंच धातु, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपके अशुभ फलों में कमी आएगी तथा मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभफलों में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।